वर्ष-17 अंक-180 पृष्ठ-8 मूल्य-1 रुपए कानपुर, मंगलवार 04 जुलाई 2023

कानपुर व औरैया से एक साथ प्रकाशित, लखनऊ, इलाहाबाद, बुंदेलखंड, फतेहपुर, इटावा, कन्नौज, मैनपुरी, ऐटा, हरदोई, उन्नाव, कानपुर देहात में प्रसारित

RNI N.UPHIN/2007/27090

दैनिक नगर छाया

आप की आवाज़.....

मत्स्य पालन के लिए जारी हुई एडवाइजरी

कानपुर (नगर छाया समाचार)। चंद्रशेखर आज़ाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्विद्यालय कानपुर के अधीन संचालित मत्स्य महाविद्यालय एवं शोध के मत्स्य विशेषज्ञ डॉ0 ध्रुव कुमार ने बदलते मौसम में मत्स्य पालन के लिए एडवाइजरी जारी करते हुए बताया है कि इस समय वर्षात का मौसम चल रहा है जिससे बहुत से तालाबों में वर्षा के पानी के साथ साथ नाले , नहरों ,नदियों आदि के पानी में अवांछनीय एवं जंगली मछलियां , अकार्बनिक तत्व बहकर तालाबों में आ जाते हैं।जिसमे मछलियां हमारे तालाब के प्रजनकों , छोटी मछलियों आदि को खा जाते हैं। वहीं अवांछनीय तत्त्व विभिन्न प्रकार के रोगों का कारण बनते हैं । बदलते मौसम में बादल छाए रहने से तालाब में प्रकाश संश्लेषण की प्रक्रिया प्रभावित हो जाती है । जिससे तालाब में ऑक्सीजन की कमी हो जाती है। चूंकि इस समय आइएमसी का प्रजनन काल चल रहा है, तो मेरा उन मत्स्य पालक भाईयों से कहना है जो मत्स्य बीज उत्पादन के लिए प्रजनकों का संचय करते हैं ,वो प्रजनकों को भोजन देना बंद कर दें।जिससे उनके प्रजनन मे आसानी हो सके और उनका विकास दर बड़ सके । साथ ही डा ध्रुव कुमार का मत्स्य पालकों से कहना है कि यदि तालाब की मछलियों में किसी भी प्रकार का रोग अथवा अनियमितता दिखाई दे तो तालाब में लाल दावा का प्रयोग कर सकते हैं । अच्छा उत्पादन एवं मछलियों को रोगों से बचाव के लिए किसान भाईयों को सप्ताह में एक बार अपने तालाब में जाल अवस्य चलाना चाहिए।

Sign in to edit and save changes to this file.

शाश्वत टाइम्स

हिन्दी दैनिक

वर्ष: 8, अंक : 38 पृष्ठ : 12
कानपुर महानगर, मंगलवार
04 जुलाई, 2023
मूल्य ₹ 3.00

www.shashwattimes.com

बदलते मौसम में मत्स्य पालन के लिए तालाब प्रबंधन

शाश्वत टाइम्स

कानपुर। चंद्रशेखर आज़ाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्विद्यालय कानपुर के अधीन संचालित मत्स्य महाविद्यालय एवं शोध के मत्स्य विशेषज्ञ डॉ0 ध्रुव कुमार ने बदलते मौसम में मत्स्य पालन के लिए एडवाइजरी जारी करते हुए बताया है कि इस समय वर्षात का मौसम चल रहा है जिससे बहुत से तालाबों में वर्षा के पानी के साथ साथ नाले , नहरों ,नदियों आदि के पानी में अवांछनीय एवं जंगली मछलियां , अकार्बनिक तत्व बहकर तालाबों में आ जाते हैं।जिसमे मछलियां हमारे तालाब के प्रजनकों , छोटी मछलियों आदि को खा जाते हैं। वहीं अवांछनीय तत्त्व विभिन्न प्रकार के रोगों का कारण बनते हैं । बदलते मौसम में बादल छाए रहने से तालाब में प्रकाश संश्लेषण की प्रक्रिया प्रभावित हो जाती है । जिससे तालाब में ऑक्सीजन की कमी हो जाती है। चूंकि इस समय आइएमसी का प्रजनन काल चल रहा है, तो मेरा उन मत्स्य पालक भाईयों से कहना है जो मत्स्य बीज उत्पादन के लिए प्रजनकों का संचय करते हैं ,वो प्रजनकों को भोजन देना बंद कर दें।जिससे उनके प्रजनन मे आसानी हो सके और उनका विकास दर बड़ सके । साथ ही डा ध्रुव कुमार का मत्स्य पालकों से कहना है कि यदि तालाब की मछलियों में किसी भी प्रकार का रोग अथवा अनियमितता दिखाई दे तो तालाब में लाल दावा का प्रयोग कर सकते हैं । अच्छा उत्पादन एवं मछलियों को रोगों से बचाव के लिए किसान भाईयों को सप्ताह में एक बार अपने तालाब में जाल अवस्य चलाना चाहिए।

WORLD
खबर एक्सप्रेस
सोमवार
03 जुलाई, 2023
अंक - 425

कानपुरःबदलते मौसम में मत्स्य पालन के लिए तालाब प्रबंधन

कानपुर। चंद्रशेखर आज़ाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्विद्यालय कानपुर के अधीन संचालित मत्स्य महाविद्यालय एवं शोध के मत्स्य विशेषज्ञ डॉ0 ध्रुव कुमार ने बदलते मौसम में मत्स्य पालन के लिए एडवाइजरी जारी करते हुए बताया है कि इस समय वर्षात का मौसम चल रहा है जिससे बहुत से तालाबों में वर्षा के पानी के साथ साथ नाले , नहरों ,नदियों आदि के पानी में अवांछनीय एवं जंगली मछलियां ,अकार्बनिक तत्व बहकर तालाबों में आ जाते हैं। जिसमें मछलियां हमारे तालाब के प्रजनकों , छोटी मछलियों आदि को खा जाते हैं। वहीं अवांछनीय तत्त्व विभिन्न प्रकार के रोगों का कारण बनते हैं । बदलते मौसम में बादल छाए रहने से तालाब में प्रकाश संश्लेषण की प्रक्रिया प्रभावित हो जाती है । जिससे तालाब में ऑक्सीजन की कमी हो जाती है। चूंकि इस समय आइएमसी का प्रजनन काल चल रहा है, तो मेरा उन मत्स्य पालक भाईयों से कहना है जो मत्स्य बीज उत्पादन के लिए प्रजनकों का संचय करते हैं ,वो प्रजनकों को भोजन देना बंद कर दें ।जिससे उनके प्रजनन मे आसानी हो सके और उनका विकास दर बड़ सके । साथ ही डा ध्रुव कुमार का मत्स्य पालकों से कहना है कि यदि तालाब की मछलियों में किसी भी प्रकार का रोग अथवा अनियमितता दिखाई दे तो तालाब में लाल दावा का प्रयोग कर सकते हैं । अच्छा उत्पादन एवं मछलियों को रोगों से बचाव के लिए किसान भाईयों को सप्ताह में एक बार अपने तालाब में जाल अवस्य चलाना चाहिए।

रहस्य संदेश

RNI. NO. UPHIN/2007/20715

31 लखनऊ एंव एटा से प्रकाशित, मंगलवार, 04 जुलाई, 2023 पृष्ठ: 8 मूल्य: 0

बदलते मौसम में मत्स्य पालन के लिए तालाब प्रबंधन

(अनवर अशरफ) कानपुर चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्विद्यालय कानपुर के अधीन संचालित मत्स्य महाविद्यालय एवं शोध के मत्स्य विशेषज्ञ डॉ० ध्रुव कुमार ने बदलते मौसम में मत्स्य पालन के लिए एडवाइजरी जारी करते हुए बताया है कि इस समय वर्षात का मौसम चल रहा है जिससे बहुत से तालाबों में वर्षा के पानी के साथ साथ नाले, नहरों, नदियों आदि के पानी में अवांछनीय एवं जंगली मछलियां, अकार्बनिक तत्व बहकर तालाबों में आ जाते हैं।जिसमे मछलियां हमारे तालाब के प्रजनकों, छोटी मछलियों आदि को खा जाते हैं। वहीं अवांछनीय तत्त्व विभिन्न प्रकार के रोगों का कारण बनते हैं। बदलते मौसम में बादल छाए रहने से तालाब में प्रकाश संश्लेषण की प्रक्रिया प्रभावित हो जाती है। जिससे तालाब में ऑक्सीजन की कमी हो जाती है। चूंकि इस समय आइएमसी का प्रजनन काल चल रहा है, तो मेरा उन मत्स्य पालक भाईयों से कहना है जो मत्स्य बीज उत्पादन के लिए प्रजनकों का संचय करते हैं, वो प्रजनकों को भोजन देना बंद कर दें।जिससे उनके प्रजनन मे आसानी हो सके और उनका विकास दर बड़ सके। साथ ही डा ध्रुव कुमार का मत्स्य पालकों से कहना है कि यदि तालाब की मछलियों में किसी भी प्रकार का रोग अथवा अनियमितता दिखाई दे तो तालाब में लाल दावा का प्रयोग कर सकते हैं। अच्छा उत्पादन एवं मछलियों को रोगों से बचाव के लिए किसान भाईयों को सप्ताह में एक बार अपने तालाब में जाल अवस्य चलाना चाहिए।